REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

वैश्विक स्तर पर हिन्दी की भूमिका

डॉ. भागीरथ
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी , शाह सतनाम जी बॉयज कॉलेज,
सिरसा (हरियाणा)

प्रस्तावना :

हिन्दी भारत की एक राष्ट्रीय भाषा है। विश्व स्तर पर हिन्दी की अस्मिता बनी हुई है। हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पंहुचने के लिए अनेक संघर्ष करने पड़े है। जिसके बाद हिन्दी विश्व स्तर पर अपनी भूमिका बना पाई है। यूं तो भारत में लगभग 22 भाषाएं बोली जाती हैं । लेकिन इनमें से हिन्दी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा के रूप में सामने आई। 14 सितंबर 1950 में जब संविधान लागू हुआ तभी से विश्व स्तर पर 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाने शुरुआत कर दी गई । जब से यह दिवस मनाने की घोषणा हुई तब उसकी वजह थी संविधान की भाषा हिन्दी का सम्मान करना । आज इसकी वैश्विक सिथति सम्मानीय और प्रगतिवान है। हिन्दी के महत्व के संदर्भ में भारतेंदु हरिशचन्द्र ने लिखा है–

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति का मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत ना हिय का सूल।"

विदेशों में भारतीय संस्कृति को मानने वाले करोड़ों लोग है, जिनमें से अधिकत्तर लोगों का हिन्दी के प्रति विशेष लगाव था। हिन्दी को चीनी के बाद विश्व के दूसरे स्थान की अधिकारिणी बताते हुए डॉ0 संजय चौहान मानते है कि "भारतीय मूल के लगभग एक करोड़ तीस लाख लोग दुनिया के 132 देशों में फैले हुए है। इसमें आधे से अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करते है।"[1] विश्वभर में जहां हम हिन्दी की पंहुच और प्रयोग उनके नामों की एक लम्बी कतार है। हमारे लिये गर्व की बात है कि आज विदेशों मे चालीस से अधिक देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालय और स्कूलों में हिन्दी विशेष रूप से पढाई जा रही है । भारत से बाहर जिन देशों में हिन्दी का बोलने, लिखने, पढने तथा अध्ययन– अध्यापन की दृष्टि से प्रयोग हो रहा है, उनमें पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, फिजी, श्रीलंका, मालद्वीप, इंदोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया, तथा जापान आदि ऐसे कई देश हैं जो भारतीय संस्कृति से प्रभावित हैं। इन प्रवासी भारतीयों ने विदेशों मे हिन्दी के प्रचार–प्रसार में महती भूमिका निभाई है। विश्व में हिन्दी की स्थिति पर चर्चा करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि हिन्दी का प्रयोग करने वालों की संख्या के आधार पर 1952 में हिन्दी विश्व में पांचवे स्थान पर थी। "वैश्वीकरण के इस दौर में अपना अस्तित्व बनाने के लिए सबसे बड़ी चुनौती हिन्दी के सामने है, मानक भाषा की क्योंकि विश्व के जिन देशों में हिन्दी बोली जाती है उसमें वहां की स्थानीय भाषा का पुट मिल जाता है, साथ ही जो हिन्दी प्रदेशों में बोली जाती वहीं हिन्दी हिन्दीत्तर राज्यों में प्रयुक्त नहीं होती। कलकत्तियाँ, बंबइया हिन्दी इसके उदाहरण है। प्रत्येक देश की मूल भाषाओं का प्रभाव हिन्दी पर पड़ रहा है। इसलिए विश्वस्तर पर हिन्दी के नए–नए रूप विकसित हो रहे हैं।"[2]

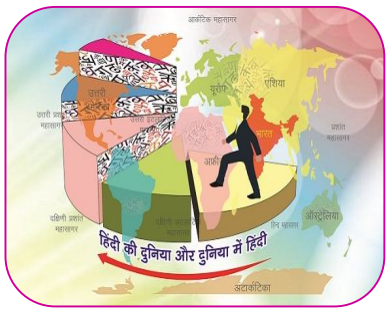

विश्व बाजार को संपूर्ण अभिव्यक्ति देने के कार्य में हिन्दी ने अपनी अभिसारी शैली को ओर अधिक व्यापक कर दिया इस व्यापकता में उसके रूप–स्वरूप में अनेक परिवर्तन आये है। इस परिवर्तन पर नित प्रति

आलोचना, प्रशंसा, बहस होती रहती है। फिर भी हिन्दी अपनी प्रयोगधर्मिता का गुण बढाते हुए आज वैश्विक स्तर पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज हिन्दी भाषा की बात की जाये तो इस भाषा का प्रचलन भारत, नेपाल, मलेशिया, इंडोनेशिया, सूरीनाम, फिजी, गुयाना, मॉरीसिस, त्रिनिडाड एवं टोबैगो जैसे करीब पचास देशों में है। इसमें कोई दोहराई नहीं कि भारत देश के साथ–साथ विदेशों में भी हिन्दी की लोकप्रियता बढी है। इसका प्रमाण है कि भारत के केंद्रीय हिन्दी संस्थान में विदेशी छात्रो की दिन–प्रतिदिन बढती संख्या। इन हिन्दी संस्थानों में आज लगभग 67 देशों से विदेशी छात्र हिन्दी भाषा का अध्ययन कर रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका किसी दूसरी भाषा से अच्छी तरह से सिद्ध कर रही है। भारत में हिन्दी भाषा का स्वरूप चाहे जैसा भी हो परन्तु विश्व स्तर पर अपना अस्तित्व बनाने में हिन्दी कामयाब भाषा सिद्ध हुई है। वर्तमान में हिन्दी भाषा को जानने, समझने और सिखने वालों की संख्या देखकर ये अंदाजा लगाया जा सकता है कि हिन्दी का प्रचलन किस तरह से बढ रहा है। "भाषा वैज्ञानिकों का मत है कि भाषा का प्रयोग अपने परिवेश, स्थिति तथा संदर्भ के अनुसार करता है। आज के परिवेश एवं संदर्भ के अनुसार हिन्दी भाषा केवल साहित्यिक या संप्रेषण की भाषा नहीं रही। वह तो कामकाज, कार्यपद्धति, विज्ञान तकनीक, प्रौद्योगिकी, विधि, चिकित्सा, वाणिज्य के साथ–साथ संगणक, सैल्युलर, इंटरनेट, सैटेलाइट, सूचना, सुपर हाइवे की भाषा बनने लगी है। जनसंचार माध्यमों की समाज सापेक्ष्य सेवा माध्यम के रूप में प्रयुक्त हो रही है। सामाजिक संदर्भ के गतिशील प्रवाह में अपने–अपने गुणों को बढ़ा रही है। वह संचार की भाषा बन भाषाई क्षमता तथा भाषा व्यवहार को गति प्रदान कर रही है। संचार भाषा के सभी गुण हिन्दी में है। जिसके कारण वह आज विश्वभाषा बन रही है।"[3] हिन्दी समस्त संसार में वह करोड़ों लोगों द्वारा समझी जाती है। इसका प्रसार लगभग डेढ़ सौ देशों में है। यह लगभग एक दर्जन देशों में जन भाषा के रूप में प्रचलित है। इन देशों को तीन भागों में विभाजित करना तर्कसंगत होगा– (1) भारत के पड़ोसी राष्ट्र, (2) भारतवंशी राष्ट्र, (3) आप्रवासी बहुल राष्ट्र। 'विश्व पटल पर हिन्दी' का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है, विश्वबोध। हिन्दी का सम्बन्ध संस्कृत, पालि और भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, स्पेनिश, डच, पुर्तगाली आदि कई भाषाओं से है। इस भाषा ने हजारों शब्दों का आदान–प्रदान किया है। हिन्दी–सेवियों ने सैकड़ों विश्वविख्यात ग्रन्थों के अनुवाद किये हैं। दर्जनों विश्व विभूतियों पर ग्रन्थ लिखे हैं। कई यात्रासंस्मरण लिखे हैं तथा विश्व की घटनाओं पर अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की हैं। हिन्दी ने अनेक विश्वस्तरीय विचारधाराओं को आत्मसात् किया है तथा देश–देशान्तर तक अपनी 'भारत विद्या' का निर्यात भी किया है। हिन्दी की रूप रचना अर्थात् व्याकरण, शब्दकोश, पाठ्यक्रम, शोध, समीक्षा एवं सर्जनात्मक लेखन में सैकड़ों विदेशी विद्वानों का योगदान रहा है। "हिन्दी विश्व में दूसरी सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा है साथ ही हिन्दी को समझने वालों की संख्या भी विश्व में बहुत है। हिन्दी को बोलने एवं समझने वालों को जोड़ दिया जाए तो हो सकता है कि हिन्दी दुनिया की सर्वाधिक व्यवहार होने वाली भाषा सिद्ध होगी। हिन्दी को इस वैशिविक स्तर पर पंहुचाने में भूमंडलीकरण एवं संचार–माध्यमों ने भाषा समृद्ध समाज के साथ–साथ भाषा वंचित समाज के सदस्यों को भी वैशिविक संदर्भों से जोड़ दिया है। संचार माध्यम एवं भमंडलीकरण के कारण ही बड़ी–बड़ी अंतराष्ट्रीय कंपनियों को भारत जैसे विशाल देश के उपभोक्ताओं तक पंहुचाने के लिए हिन्दी और भारतीय भाषाओं का सहारा लेना पड़ रहा है।"[4] इधर हिन्दी फिल्मों, धारावाहिकों, पत्र–पत्रिकाओं और मीडिया कार्यक्रमों ने उसे विश्व के कोने–कोने में पहुँचाया है। कम्प्यूटर, इण्टरनेट से उसका काफी विस्तार हुआ है।

आज हमें आपको यह निर्णय लेने का भी समय आ गया है कि देश के कई नाम, राष्ट्रीयता के कई नाम और राष्ट्र कि कई प्रचलित भाषाओं में से एक को चुनें और दृढता से उसका प्रयोग करें, आने वाली उलझनों से लड़ने की मानसिकता के साथ यह भी निश्चय करलें कि हम देश को 'भारत',राष्ट्रीयता को भारतीय और भाषा को भारती कहेंगें। भारती शब्द पर चौंकने की आवश्यकता नहीं है भारती हिन्दी ही होगी मगर कुछ संशोधनों के बाद, संशोधनों के बाद इसलिए कि संसार में कोई वस्तु, तत्व, विचार,धर्म या भाषा सम्पूर्ण या त्रुटिरहित नहीं है, हो भी नहीं सकती। सम्पूर्णता सम्भव भी नहीं है। किन्तु हम सम्पूर्णता के अधिक सन्निकट प्रस्तुतिकरण दें यह हमारे खुले दिमाग, निष्पक्ष सोच और सम्भव उपलब्धता पर ही निर्भर करेगा। भाषाविदों ने हिन्दी और देवनागरी लिपि में भी मापदण्डों के अनुरूप कुछ त्रुटिया पाई हैं।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह भाषा हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। जब विश्व के 177 देशों की मान्यता के साथ 21

जून को विश्व योग दिवस के रूप में अपनाया जा सकता है तो हिंदी भाषा को भी संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषाओं की सूची में शामिल क्यों नहीं किया जा सकता जबकि इसके लिए तो सिर्फ 127 देशों के समर्थन की ही आवश्यकता है। यह बात केंद्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने भोपाल में दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन के अवसर पर कही। तीन दिवसीय विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन होने के नाते उनके उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी भाषा वैश्विक पटल पर भी तकनीक और डिजिटलाइजेशन के क्षेत्र में विस्तार और बड़े बाजार की अनंत संभावनाएं समेटे हुए है। हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। "व्यवहारिक दृष्टि से हिन्दी में सरलता, बोधसुलभता, सुचारूता अधिक है। उसका लचीला रूप केवल भारतीय भाषाओं को ही नही अपनाता, बल्कि विदेशी भाषाओं को भी वह सहजता से अपनाती है। हिन्दी की देवनागरी लिपि और वैज्ञानिकता को देख बाजार–क्रांति ने उसे अधिक अपनाया है। आज के संचार युग के दौर में भाषा वैज्ञानिकों तथा विशेषज्ञों ने भविष्यवाणी करते हुए कहा है कि सूचना संचार में केवल 14 भाषाए जीवित रहेंगी। उसमें हिन्दी भाषा का नाम है।"[5] उन्होंने कहा कि गूगल के आंकड़ों के मुताबिक आज इंटरनेट पर सबसे ज्यादा मौलिक विषयवस्तु हिंदी भाषा में रचे जा रहे हैं। श्री राजनाथ सिंह ने उद्योग जगत से आग्रह किया कि वे अपने उत्पादों के नाम सहित अन्य विवरण हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में लिखने के बारे में विचार करें। श्री सिंह ने कहा कि बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे इस देश के हर प्रांत के साथ दुनिया भर में भली प्रकार समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

विश्व पटल पर हिन्दी की महत्ता बढाने में हमारे भारतीयों की कुशाग्र बुद्धि, कड़ी मेहनत एवं प्रतिभा का बहुत बडा योगदान रहा है। विश्व के तमाम देशों की उन्नति में भारतीयों ने जो सहायता की है, उससे प्रभावित विदेशियों को समझ आ गया है कि भारतीयों से अच्छे संबंध बनाने के लिये हिन्दी सीखना बहुत जरूरी है। आज विश्व भर में कई पत्र–पत्रिकाए , बेवसाइट तथा ब्लॉग्स हैं, जो हिन्दी भाषी होकर हिन्दी का प्रचार–प्रसार बखूबी कर रहे हैं। विश्वभर से मिल रहे हिन्दी को सम्मान व लोकप्रियता पर मुझे गर्व है कि हमारी राष्ट्रभाषा एवं मातृभाषा हिन्दी को खोया हुआ सम्मान पुनः मिल गया है। परंतु हमारी प्राथमिकताएं यहीं खत्म नहीं होती। हमें हिन्दी के विकास, प्रचार व प्रसार में निरंतर प्रयत्नशील रहने की जरूरत है। "हिन्दी और संस्कृत में साम्य के जहां अनेक लक्षण विद्यमान वहां यह लक्षण भी है कि जैसे संस्कृत किसी की भी मातृभाषा न होकर समग्र देश की भाषा रही, वैसे ही दिल्ली और अत्यंत समीपवर्त्ती स्थानों को छोड़ तेा हिन्दी भी किसी प्रांत विशेष की भाषा नहीं है। अतः संस्कृत के समान ही सारे देश की भाषा बनने के योग्य है।"[6]

माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढावा दे रही हैं। संक्षेप में, यह स्थापित सत्य है कि अंग्रेजी के दबाव के बावजूद हिंदी बहुत ही तीव्र गति से विश्व मन के सुख–दुःख, आशा–आकांक्षा की संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के दर्जनों देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं तथा अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के कृति रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा उदारतापूर्वक विश्व मन का संस्पर्श कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं। हिंदी विश्व के प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन में भागीदार है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन–पाठन हो रहा है। वर्तमान में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान–प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं तो हिंदी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहु सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा–सर्वदा से विश्वमन को जोडा है। हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। "राष्ट्र भाषा ने किसी भी क्षेत्रिय भाषा का अहित नहीं किया है। वस्तुतः स्थिति यह है कि देश की सभी भाषाए अंग्रेजी के दबाव के कारण अकुला रही है, जब तक अंग्रेजी का दबदबा नहीं हटता तब तक देश की यह आकुलता भी मौजूद रहेगी।"[7]

आज स्थिति यह है कि गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से हिंदी अपने वैविध्य एवं बहुस्तरीयता में संपूर्ण विश्व में सर्वोपरि है। वर्तमान समय में हिंदी का कथा साहित्य भी फ्रेंच, रूसी तथा अंग्रेजी के लगभग समकक्ष है। इसकी क्षतिपूर्ति हिंदी सिनेमा द्वारा भलीभाँति होती है। वह देश की सभ्यता, संस्कृति तथा बदलते संदर्भों एवं अभिरुचियों की अभिव्यक्ति का बडा ही सफल माध्यम रहा है। आज हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में जितने रचनाकार सृजन कर रहे हैं उतने बहुत सारी भाषाओं के बोलने वाले भी नहीं हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ¬सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाएँ। इसके लिए समवेत प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराइयों तक महसूस करें और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित हों। वर्तमान समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों ताकि तमाम निकर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिये हिंदी को सही मायने में विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें। अतः हमें एकजुट होकर हिंदी को उसका स्वाभाविक अधिकार दिलाने के लिए भारत सरकार पर दबाव बनाना चाहिए।

[1] राष्ट्रभाषा हिन्दी –नवम्बर 2002

[2] वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य – डॉ0 माधव सोनटक्के, प्रा0 डॉ0 अंबादास देशमुख, पृ0 188

[3] वैश्विकता के संदर्भ में हिन्दी – डॉ0 शैलजा पाटील, पृ0 30

[4] वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य – डॉ0 माधव सोनटक्के, प्रा0 डॉ0 अंबादास देशमुख, पृ0 186

[5] वैश्विकता के संदर्भ में हिन्दी – डॉ0 शैलजा पाटील, पृ0 52

[6] रामधारी सिंह दिनकर, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, पृ0 52

[7] रामधारी सिंह दिनकर, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, पृ0 10